letter2:letter1.qxd 9/26/2010 8:43 PM Page 140

13

प्रिय युवा बंधुओं और बहनों,

सदियों की गुलामी के बाद भारत स्वतंत्र हो पाया है। गुलामी के काल में सामूहिक जीवन का ह्रास हुआ। हर एक व्यक्ति अपना स्वार्थ देखने लगा। हर योजनाओं को देश की उन्नति का मार्ग बता रहे हैं।

देश के 80 करोड़ से अधिक नागरिक बेकारी, गरीबी और भुखमरी के शिकार बने हुए हैं। जबकि

बात में सरकार की ओर देखने व सरकार के कृपा-पात्र बनने की प्रवृत्ति बन गई। स्वतंत्रता प्राप्त होते ही इस गुलामी की प्रवृत्ति को समूल नष्ट करना चाहिए था। किन्तु इस ओर हमारे नेतृत्व ने तनिक भी ध्यान नहीं दिया। आज भी देश की आम जनता शासन की गुलामी में जी रही है। वह स्वयं होकर अपने देश की उन्नति का कोई प्रयास नहीं करती। नौकरशाही, जो अंग्रेजों के काल में हम पर शासन करती थी, वही अब अधिक भ्रष्टाचारी बनकर शासन कर रही है और हमारे तथाकथित शासक अपनी देश का एक नागरिक संसार का सर्वाधिक धनवान बना है। क्या यही देश की आजादी का लक्ष्य था?

शुभाकांक्षी

नाना देशमुख

(नाना देशमुख)

देश की आम जनता शासन की गुलामी में जी रही है। वह स्वयं से अपने देश की उन्नति का कोई प्रयास नहीं करती। हर बात में सरकार की ओर देखने व सरकार का कृपापात्र बनने की प्रवृति बन गई है।

14

प्रिय युवा बंधुओं और बहनों,

युगों-युगों से अपना समाज विश्व में विराजमान है। उस पर अनेक विदेशियों ने आक्रमण किए। किन्तु अधिकांश असफल रहे। मुगलों का और अंग्रेजों का शासन बहुत लम्बे काल तक रहा। इसके बावजूद हमारा समाज अपना अस्तित्व बनाए रख सका। तभी हम 1947 में अपनी आजादी प्राप्त कर सके।

अपने समाज का चरित्र सकारात्मक रहा है। मानव मात्र का कल्याण हमारा लक्ष्य रहा है।

उसने प्रकृति को मातृवत् माना। अतः उसी के गोद में वह पलता रहा। इसी कारण, ग्रामीण जीवन हमारा स्वभाव बना। प्रकृति ही मानव का लालन-पालन करती है। प्रकृति को वह भोग-भूमि नहीं मानता, अपितु मातृवत् मानकर दोहन करता है। इसी कारण हम ग्रामों में मिल-जुलकर रहते आए।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद गांधी जी ने नेहरू जी को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। लेकिन नेहरू जी ने गांधी जी के ग्राम्य-जीवन को अमान्य कर दिया। वे दुनिया के तथाकथित आधुनिक आर्थिक लाभ के मार्ग पर चल पड़े।

नेहरू जी द्वारा प्रतिपादित आधुनिक मार्ग के अवलंबन का क्या दुष्परिणाम होता है, यह श्रीमान् भारत डोगरा ने निम्न शब्दों में कहा है -

''आज के विकसित देशों में से अधिकांश ने आरंभ में औपनिवेशिक लूट से अपनी समृद्धि की नींव रखी। तरह-तरह की अमानवीय क्रूरता से उन्होंने एशिया व अफ्रीका के महाद्वीपों के अतिरिक्त अमेरिका व आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों को लूटा। लाखों लोगों को निर्दयता से मार दिया गया और शेष को गुलाम बना दिया गया। इतना ही नहीं, जब ये देश औपचारिक तौर पर आजाद हो गए, तब भी विकसित देशों ने ऐसी वित्तीय व व्यापारिक अंतरर्राष्ट्रीय व्यवस्था बनाने की कोशिश की जिसमें पुरानी औपनिवेशिक व्यवस्था के स्थान पर एक नया उपनिवेशवादी शोषण चलता रहे। इसे सफल बनाने के लिए कई विकासशील देशों में लोकतांत्रिक सरकारों को गिराकर विकसित देशों की पिछलग्गू सरकार या तानाशाह की सत्ता स्थापित करने से भी परहेज नहीं किया।

अब इस जीवन शैली की आदत हो जाने के कारण इसे बनाए रखने के लिए वे बहुत अधिक पर्यावरण विनाश भी कर रहे हैं।''

इस अमानुषिक प्रवृत्ति को उखाड़ फेंकना स्वतंत्र भारत का परंपरागत आद्य कर्तव्य रहा है। किन्तु नवस्वतंत्र भारत का नेतृत्व इसी अमानुषिक प्रवृत्ति का अनुगामी बना है।

शुभाकांक्षी

नाना देशमुख

(नाना देशमुख)

स्वराज्य प्राप्ति के बाद गांधी जी ने नेहरू को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। लेकिन नेहरू जी ने गांधी जी के ग्राम्य-जीवन को अमान्य कर दिया।